विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद

दवा कंपनियों की माया, उनके आगे कोई न टिक पाया

हाल ही में ''फेडरेशन ऑफ मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव एसोसिएशन ऑफ इंडिया'' ने उच्चतम न्यायालय में दायर एक याचिका में बताया कि दवा निर्माता कंपनी द्वारा डोलो- 650, मरीजों को लिखने के लिए चिकित्सकों को 1000 करोड़ रुपए की रिश्वत दी गई। चिकित्सा जगत में इस प्रकार की राशि को रिश्वत नहीं अपितु कमीशन या प्रोत्साहन राशि कहा जाता है। य़ह चौंका देने वाला आंकड़ा है, क्योंकि यदि इतनी बड़ी राशि चिकित्सकों को प्रोत्साहन के रूप में दी जा रही है, तो कंपनी ने तो इस से चार-पांच गुना अधिक कमाया ही होगा। स्वाभाविक है कि यह सब वसूल मरीजों से ही किया गया है। कोरोना- काल में, जब सभी लोग कोविद-19 से पीड़ित होकर त्राहि-त्राहि कर रहे थे, उस समय चिकित्सकों द्वारा लगभग प्रत्येक मरीज को डोलो-650 लिखी गई। उस समय कोई न समझ पाया कि अचानक यह दवा इतनी क्यों लिखी जा रही है? अब इस याचिका से यह खुलासा हुआ है कि इसके पीछे इतनी बड़ी धनराशि का हाथ था। चिकित्सकों ने, यह जानकारी होते हुए भी कि इससे कहीं सस्ती पेरासिटामोल दवाइयां उपलब्ध हैं, फिर भी धन के लोभ में डोलो-650 लिखना प्रारंभ कर दिया। मरीज के पास तो वैसे भी कोई विकल्प नहीं होता है। और डॉक्टर द्वारा लिखी दवाएं आंख बंद करके खरीद लेता है।

मरीज़ के इलाज में चार प्रभावित पक्ष हैं, दवा निर्माता कंपनियां, डॉक्टर, दवा विक्रेता और मरीज़। दवा कंपनियां और डॉक्टर मिलकर मरीज़ की जेब काटते रहे हैं। कोरोना की महामारी ने तो एक प्रकार से कोढ़ में खाज का काम किया।

अब जरा हम यह देखें कि दवा कंपनी और चिकित्सकों का गठजोड़ किस प्रकार काम करता है और कैसे न केवल दवा कंपनियां अपना आर्थिक साम्राज्य कायम कर लेती हैं, वे चिकित्सकों को भी इसमें एक प्रकार से महत्वपूर्ण भागीदार बना लेती हैं। लगभग 30 वर्ष पूर्व भारत सरकार ने एक निर्णय लिया कि दवा बनाने वाली प्रत्येक कंपनी अपनी दवा पर एमआरपी अर्थात अधिकतम विक्रय मूल्य अंकित करेगी। लोगों ने यह सोचा कि इसके पश्चात दवा कंपनियों द्वारा मनमानी कीमत वसूलने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी। किंतु ऐसा नहीं हो पाया, क्योंकि कंपनियों ने अपने मनमानी तौर पर एमआरपी अंकित करना शुरू कर दिया। किसी ने यह जांच नहीं की कि किसी दवाई को बनाने की कितनी लागत आती है और उस पर अपना मुनाफा जोड़कर एमआरपी कितनी होनी चाहिए? नतीजा यह हुआ कि जिस दवा की निर्माण लागत 1 होती है, उसकी एमआरपी 10-20 रुपये तक अंकित होने लगी। मरीज़ आंख बंद करके एमआरपी के अनुसार दवाई खरीदने लगा। उसे यह पता नहीं लगा कि जो दवा वह खरीद रहा है उसकी वास्तविक कीमत कितनी है? दवा विक्रेता उस पर 5-10 प्रतिशत छूट देकर ग्राहक पर अहसान जताने लगा।

इस प्रकार की व्यवस्था में सभी पैसा कमाने लगते हैं- डॉक्टर, दवा विक्रेता एवं दवा कंपनियां। बस केवल शोषण होता है उस मरीज का जो पहले ही दुखी होता है। सरकार ने केवल कुछ ही दवाओं को जीवन दायक मानते हुए उनके लिए एमआरपी अपने स्तर पर निर्धारित की है। लगभग 99 प्रतिशत दवाइयां ऐसी हैं जिनकी निर्माता कंपनियों ने अपने स्तर पर मनमाने रूप से विक्रय मूल्य तय कर लिया है। सरकार ने कोई नियंत्रण, दवाओं के मूल्य के संबंध में नहीं किया एवं जनता को दवा कंपनियों की दया पर छोड़ दिया।

जब दवा की लागत और एमआरपी में बहुत अंतर होगा तो उस के मुनाफे में से दवा विक्रेता एवं चिकित्सकों को बहुत बड़ी धनराशि देने में कंपनियों को कोई परेशानी नहीं होगी। यह सब करने के बाद भी वे बहुत बड़ा मुनाफा कमा लेते हैं, जैसा कि डोलो वाले प्रकरण में पता लगा है। सरकार ने कुछ वर्षों से जेनेरिक दवाइयों की बात करना प्रारंभ किया है। जेनेरिक दवाइयां वे हैं जो किसी ब्रांड के नाम पर नहीं बिकती, अपितु उस दवा में जो तत्व है उन्हीं के नाम से बेची जाती हैं। राजस्थान सरकार ने इस दिशा में कुछ साल पहले महत्वपूर्ण पहल की थी। राज्य में अस्पतालों के नजदीक लाइफ लाइन स्टोर खोले, जहां पर जेनेरिक दवाइयां उपलब्ध करायी गई। यह आम धारणा गलत है कि जेनेरिक दवाइयां निम्न स्तर की होती हैं और वे बीमारी के इलाज में प्रभावी नहीं हैं। यह भ्रांति फैलाना में डॉक्टरों का बड़ा योगदान है। ब्रांडेड दवाइयां लिखने पर उन्हें बहुत बड़ी राशि कमीशन के रूप में प्राप्त होती है। डॉक्टर यह चाहते हैं कि वे मरीज को ब्रांड के नाम से दवा लिखें ताकि वे दवा बनाने वाली कंपनी से मोटा लाभ लाभ प्राप्त कर सकें।विभिन्न कंपनियों के प्रतिनिधि जिन्हें एमआर (मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव) कहा जाता है, का काम ही होता है, डॉक्टरों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर उनकी कंपनियों की ब्रांडेड दवा लिखने हेतु राजी करें। दवा विक्रेता यदि उसी प्रकार की दूसरी वैकल्पिक दवा दे तो डॉक्टर उसे अस्वीकार कर देता है। यही कारण है कि डॉक्टर जो दवाएं लिखते हैं, वे सामान्यतया उनके घर और अस्पताल के पास वाले मेडिकल स्टोर पर ही उपलब्ध होती हैं।

मरीजों की जान की कीमत पर एवं उनके आर्थिक शोषण करने में सहायक बनना क्या चिकित्सकों के लिए मजबूरी है। कतई नहीं। स्थिति को सुधारने के लिए सरकार एवं चिकित्सकों को मिलकर प्रयास करने होंगे। आम जनता में यह जागृति उत्पन्न करनी होगी कि जेनेरिक दवाएं भी उतनी ही लाभकारी हैं जितनी की ब्रांडेड दवाएं।

एक ऐसा दुष्चक्र बन चुका है, जिसकी तोड़ न सरकार के पास है और न ऐसा करने की इच्छा शक्ति उसमें है। सरकार इसे तोड़ने में अधिक रुचि नहीं रखती है क्योंकि दवा बनाने वाली कंपनियां सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों को पैसे के बल पर अपने पक्ष में निर्णय कराने की क्षमता रखती हैं। कहा गया है कि पैसा बोलता है और इस प्रकरण में तो तो पैसा सिर पर चढ़कर बोल रहा है।

राजस्थान के एक आईएएस अधिकारी डॉ. समित शर्मा जो स्वयं एक डॉक्टर हैं, ने कुछ वर्षों पूर्व जेनेरिक मेडिसिन की अवधारणा को राजस्थान में बहुत जोर-शोर से लागू किया था और उन्होंने इस प्रकार का माहौल बनाने का पूरा प्रयास किया कि सभी डॉक्टर जेनेरिक मेडिसिन ही लिखें, ताकि मरीजों को दवाएं सही कीमत पर प्राप्त हो सकें। इसी प्रकार अस्पताल में भी जेनेरिक मेडिसिन ही खरीदी जाए ताकि उपलब्ध राशि में अधिक से अधिक मरीजों को दवाएं उपलब्ध कराई जा सकें। जैसा कि सम्भावित था, डॉ. समित शर्मा को डॉक्टरों की नाराजगी झेलनी पड़ी और उन्होंने सरकार के माध्यम से उनका स्थानांतरण करवा दिया। डॉक्टरों का तर्क था कि जेनेरिक दवाएं लिखने पर सारा पैसा दवा विक्रेता कमाएगा क्योंकि तब वही यह निर्धारित करेगा कि कौन सी कंपनी की जेनेरिक दवा मरीज को देनी है। जो कंपनी अधिकाधिक लाभ दवा विक्रेता को देगी वही दवा वह मरीज को पकड़ा देगा। इस तर्क में कुछ दम अवश्य है, किंतु इस पर नियंत्रण किया जा सकता है, यदि सरकार जेनेरिक दवाइयों की भी एमआरपी तय कर दे। दवाओं की एमआरपी तय करने का काम केंद्र सरकार का है। इस काम को करने में उसकी अधिक रुचि नहीं लगती है। इस कारण मरीज हर प्रकार से आर्थिक शोषण का शिकार निरंतर होते आ रहे हैं चाहे वह दवा विक्रेता के हाथों हो अथवा डॉक्टरों के हाथों।

किसी भी दवा के निम्न स्तर का होने की बात करना बेमानी है, क्योंकि देश में कोई भी दवा, बिना ड्रग कंट्रोलर की अनुमति के एवं उसकी देखरेख के नहीं बनाई जा सकती ।आवश्यकता केवल इस बात की है कि ड्रग कंट्रोलर, अपना काम पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करें ताकि किसी भी दवा निर्माता कंपनी द्वारा गुणवत्तापूर्ण दवा ही बाजार में लाई जा सके। जब ऐसा होगा, तब बाजार में बिकने वाली प्रत्येक दवा गुणवत्तापूर्ण ही होगी। जो कंपनी दवा को सबसे कम कीमत में उपलब्ध कराएगी, वही लोगों द्वारा खरीदी जाएगी। सरकार को तो अभी यह करना है कि बाजार में बिकने वाली प्रत्येक दवा की कीमत, उसके लागत एवं मुनाफे को जोड़कर निर्धारित कर दे। साथ ही, जिन दवा निर्माताओं को दवा बनाने का लाइसेंस दिया जाए, वह अच्छी तरह जांच परखने के बाद दिया जाए।

मरीजों को शोषण से बचाने में चिकित्सकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे अंतरात्मा की आवाज़ सुनें एवं मरीजों के हित में दवाएं लिखना प्रारंभ करें न कि दवा कंपनियों द्वारा दिए जा रहे प्रलोभन के आधार पर। जब चिकित्सक अच्छी कंपनियों की जेनेरिक दवाएं लिखना प्रारंभ करेंगे तो फिर किसी कंपनी को विज्ञापन एवं उसका प्रचार प्रसार अनैतिक तरीकों से करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। तब दवा कंपनी और डॉक्टरों का अनैतिक गठजोड़ स्वत: टूट जाएगा। डॉक्टरों से अपेक्षा यही रहती है कि सबसे ऊपर अपने मरीज के हित का ध्यान रखें। जब तक डॉक्टर स्वयं जेनेरिक दवाओं के पक्ष में माहौल नहीं बनाएंगे तब तक इस दिशा में अधिक सफलता मिलना सम्भव नहीं है। गत 15-20 वर्षों में पूरे प्रयास के बाद भी जेनेरिक दवाओं की व्यवस्था सफल नहीं हो पाई है।

दवा कंपनियां, डॉक्टरों को प्रलोभन कई प्रकार के देती हैं, जिनमें सीधे नकद प्रलोभन, विदेश यात्राएं, महंगे होटलों में ठहराना, महंगे उपहार देना सम्मिलित हैं। यह सही है कि डॉक्टरों में कई अपवाद अवश्य हैं जो आज भी बिना किसी प्रलोभन के मरीजों के हित को सर्वोपरि मानकर कार्य करते हैं। शायद, ऐसे ही डॉक्टरों को भगवान का दर्जा दिया गया है।

मरीजों की जान की कीमत पर एवं उनके आर्थिक शोषण करने में सहायक बनना क्या चिकित्सकों के लिए मजबूरी है। कतई नहीं। स्थिति को सुधारने के लिए सरकार एवं चिकित्सकों को मिलकर प्रयास करने होंगे। आम जनता में यह जागृति उत्पन्न करनी होगी कि जेनेरिक दवाएं भी उतनी ही लाभकारी हैं जितनी की ब्रांडेड दवाएं। यह समस्या स्वत: ही कम हो जाएगी। इसकी संभावना कम इसलिए लगती है कि डॉक्टर इस प्रकार की अवैध और अनैतिक रूप से की गई कमाई के माध्यम से ही राजनीतिज्ञों तक पहुंच बनाते हैं और वे उनके एक ही स्थान पर बने रहना सुनिश्चित करते हैं।

निजी अस्पतालों ने तो खुली लूट ही मचा रखी है। अस्पताल थोक में दवा कंपनियों से 40-50 प्रतिशत छूट लेकर दवाएं खरीदते हैं किंतु इनमें से अधिकांश अस्पताल यह दवा सस्ते में उपलब्ध कराने के स्थान पर एमआरपी पर ही मरीजों को देते हैं। टाटा मेमोरियल जैसे अस्पताल तो अपवाद ही हैं जो सारी छूट मरीज़ों को दे देते हैं। निजी अस्पताल कानूनन लाभ के आधार पर नहीं चलाया जा सकता किन्तु यह बात केवल किताबों में रह गई है।

जनता को जागरूक होना होगा। अच्छे और बुरे डॉक्टरों में भेद करना होगा। सही और गलत अस्पताल का निर्णय करना होगा। और सरकार पर यह दबाव बनाना होगा कि वह बाजार में बिकने वाली दवा की एमआरपी निर्धारित करें। भारत जैसे देश में, जहां इलाज पर होने वाले कुल खर्च का लगभग 70 प्रतिशत मरीज खुद वहन करता है। इस दिशा में तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि मरीजों को सरकारी एवं निजी अस्पतालों में उपयुक्त दाम पर सही इलाज मिल सके।

समित शर्मा जैसे अधिकारियों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। आशा है सरकार जनता को स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ कराने की दृष्टि से उपरोक्त वर्णित कदम उठाएगी। डॉक्टरों के सम्बंध में तो हम यही अपेक्षा रखते हैं कि उनकी अंतरात्मा जागे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कम्प्यूटर संचार क्रांति, पंचायती राज के सशक्तिकरण के प्रणेता राजीव रत्न गांधी

प्रधानमंत्री रहते हुए स्व गांधी ने कई महत्वपूर्ण काम किए जिन्होंने देश के विकास को नई दिशा प्रदान की। स्व गांधी मानते थे कि युवा पीढ़ी को कंप्यूटर टेक्नोलॉजी और विज्ञान की शिक्षा देना जरूरी है। कंप्यूटर की कीमतें घटाने के लिए राजीव ने इसे सरकारी नियंत्रण से बाहर निकल दिया और असेंबल कंप्यूटर का आयात शुरू किया । बड़ी टेलीकॉम कंपनी एमटीएनएल और बीएसएनएल की शुरुआत उनके कार्यकाल में ही हुई। राजीव जी जानते थे कि गांवों को सशक्त बनाने और लोकतंत्र में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए ग्राम पंचायतों को सत्ता में वही स्थान मिलना चाहिये जो संसद और विधानसभा का है। राजीव ने ही पंचायती राज अधिनियम के माध्यम से केन्द्रीकृत सत्ता का विकेंद्रीकरण करके पंचायतों को कई महत्त्वपूर्ण और वित्तीय अधिकार दिये थे। अयोध्या में विवादित स्थल का ताला खुलवाया, उन्होंने सनातनधर्मीयों की नाराजगी को दूर करने के लिए अयोध्या के विवादित स्थल का ताला खुलवा दिया और 1989 में राम मंदिर के निर्माण के लिए शिलान्यास की इजाजत भी दे दी। युवाओं को रोजगार देने के लिए जवाहर रोजगार योजना को शुरू किया था। राजीव ने 1986 की शिक्षा नीति के तहत ग्रामीण क्षेत्र के लाखों बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा देने के उद्देश्य से जवाहर नवोदय स्कूल प्रारम्भ किये और आज तो स्थिति ऐसी है कि शहरी क्षेत्र के बच्चे भी नवोदय स्कूलों में प्रवेश ले रहे हैं।

इंदिरा गांधी एवं फिरोज गांधी के ज्येष्ठ पुत्र राजीव का जन्म 20 अगस्त 1944 को मुंबई में हुआ था। जब वे दून स्कूल में पढ़ रहे थे, तब उनके नाना पंडित जवाहरलाल नेहरू पहली बार उनसे मिलने स्कूल पहुंचे तो राजीव बाथरूम की बास्केट में छिप गए थे। राजनीति में आने से पहले राजीव गांधी एयरलाइंस में पायलट की नौकरी करते थे।।

राजीव का पूरा नाम राजीव रत्न गांधी था । उनका यह नाम उनके नाना नेहरूजी ने पत्नी कमला की याद को ताजा बनाए रखने के लिए रखा था। राजीव गांधी संगीत प्रेमी थे। उनको पश्चिमी संगीत के साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय एवं आधुनिक संगीत पसंद था। लन्दन में राजीव गांधी की मुलाकात एड्विगो मानिओ से हुई थी। 1968 में राजीव गांधी ने उनसे शादी कर ली और उनका नाम ये नाम बदलकर सोनिया गांधी रखा गया। राजीव और सोनिया के पुत्र और पुत्री राहुल और प्रियंका हैं। राजीव गांधी का स्वभाव स्नेहमय सहनशील और सरल था वे जन्म से ही दयालु और करुणा मय व्यक्ति थे । स्व. राजीव गांधी ही वो इंसान थे जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में इक्कीसवीं सदी के भारत का सपना देखा था। वे देश की कंप्यूटर क्रांति के जनक के रूप में भी जाने जाते हैं। रेलवे का कम्प्यूटरीकरण करके उन्होंने इस देश के सामने क्रांतिकारी परिवर्तन करके रख दिया।

40 वर्ष की अल्पआयु में ही में राजीव गांधी विशाल जनादेश के साथ भारत के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री बन गये थे। उस चुनाव में कांग्रेस को 508 में से रिकॉर्ड 401 सीटें प्राप्त हुई थी। स्मरणीय रहे कि राजीव गांधी राजनीति में आने अनिच्छुक थे । राजीव गांधी को अपने नाना नेहरु की तरह सुरक्षाकर्मियों का घेरा बिलकुल पसंद नहीं था। वे अपनी जीप और कार खुद ड्राइव करना पसंद करते थे। राजीव गांधी को अपने नाना से आराम हराम है और अपने पिता से अपना काम खुद करो की प्रेरणा मिली थी। युवा राजीव गांधी ने अपने मन में भारत को मजबूत, आत्मनिर्भर और तकनीकी विकास के मार्ग तेज रफ्तार से दौड़ता मुल्क बनाने का सपना संजोये रक्खा।

राजीव गांधी किसी भी निर्णय में जल्दबाजी नहीं करते थे और निर्णय लेने से पहले पार्टी के नेताओं से गहन सलाह मशविरा करते थे । उन्होंने दिल्ली शासन के तंग गलियारों से बाहर निकलकर देश के गांवों में जाकर वहां के निवासियों से

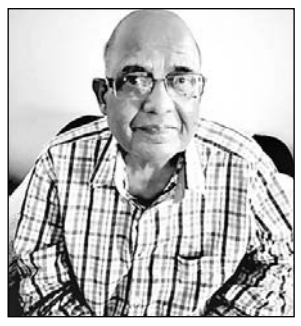

डा. जे. के. गर्ग

बात करके देश की नब्ज को टटोलना शुरू किया।

राजीव गांधी एक ऐसे प्रधानमंत्री थे जिनकी पहुंच देश के आम आदमी के हृदय तक थी। राजीव गांधी ने देश के गरीबों के उत्थान के लिए 1 अप्रैल 1989 को जवाहर रोजगार गारंटी योजना, इंदिरा आवास योजना और 10 लाख कुआं जैसी योजनाएं चालू कीं। लोग राजीव गांधी को देखने व सुनने के लिए टीवी देखा करते थे। एक ऐसा प्रधानमंत्री जिसने उस दौर में पंजाब की यात्रा की, जब देश की खुफिया एजेंसियों ने ऐसा करने से उनको मना किया था। राजीव गांधी ने पंजाब समस्या के समाधान को प्राथमिकता देते हुए 24 जुलाई, 1985 को अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोंगोवाल के साथ समझौता करके अशांत पंजाब में शांति और सौहार्द के वातावरण का निर्माण किया। राजीव गांधी वो इन्सान थे, जो जब यात्रा पर जाते थे तो तय रास्ते से अलग होकर गांवों में जाते और आम आदमी के घरों में जाना और हर व्यक्ति से हाथ मिलाना जैसे उनको अपनी मां और नाना से विरासत में मिला था।

नवंबर 1982 में भारत में आयोजित सफल एशियाई खेलों के संचालन में उनकी महत्वपूर्ण एवं सराहनीय भूमिका थी। प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी अपनी माता इंदिरा गांधी से अधिक व्यावहारिक और उदार थे। कालांतर में यही दिशा 1990 के दशक में व्यापक आर्थिक उदारवाद और मुक्त व्यापार का आधार बनी जिसे नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह ने आगे बढ़ाया। वर्ष 1986 में मिजोरम में लालडेंगा के नेतृत्व में दशकों से चल रहे अलगाववादी हिंसक आंदोलन को मिजोरम समझौते के द्वारा खत्म कर राज्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था की पुनर्स्थापना राजीव गांधी की बड़ी सफलता मानी जाती है। असम गणतन्त्र परिषद के साथ असम समझोता उन्होंने ही किया था, समझोते के बाद हुए चुनाव में विपक्ष की जीत और कांग्रेस की हार पर उन्होंने कहा कि भले ही उनकी पार्टी हार गई हो किन्तु प्रजातंत्र जीत गया है। जब राजीव ने भारत में कम्प्युटर क्रांति का सूत्रपात किया था तब अटलबिहारी बाजपेयी अडवानी और राष्ट्रीय सेवा संघ ने मखोल उड़ाया और उन्हें नोसिखिया बालक कहा।

युवा सम्राट राजीव गांधी ने सही कहा था कि कोइ भी साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक संस्था जो धर्म निरपेक्षता का विरोध करती हो, या कोइ भी राजनीतिक ताकत जो साम्प्रदायिक या धार्मिक हितों का आसरा लेती, उसे किसी भी सूरत में राष्ट्र को कमजोर बनाने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

राजीव को जब मालूम पड़ा कि अटलजी गम्भीर रोग से ग्रस्त हैं तो उन्होंने उन्हें यूएनओ जाने वाले डेलीएषण का सदस्य बना कर उनको अमेरिका भेजा और राजदूत को निर्देश दिय की उनका उपचार राजकीय खर्चे से करवाया जाये। राजीव के राजनेतिक विरोधी अटलबिहारी वाजपेयीजी ने कहा था कि अगर वे आज जिन्दा है तो इसकी वजह राजीव ही है। राजीव ने राजनीति में भी नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया, बोफोर्स कांड के आरोप के बीच संसद भंग कर नये चुनाव करवाने का जज्बा उन्हीं में था।

बोफोर्स कांड की कई वर्षों तक उनके विरोधियों द्वारा करवाई गई जाँच में उनके विरुद्ध कोई साक्ष्य नहीं मिले थे इस जाँच को करवाने में करदाताओं के करोडों रूपये बर्बाद हो गये। सीधे सच्चे ईमानदार राजीव विरोधियों एवं मीडिया के झूठे कुत्सित प्रचार के शिकार बन गये। 1989 में हुये लोकसभा चुनाव में 195 सीटे जितने और सबसे बड़े दल के नेता होने के बावजूद उन्होंने कहा कि जनादेश कांग्रेस के खिलाफ है इसलिए उन्होंने विरोधी पक्ष में बेठने का फैसला करके स्वस्थ लोकतान्त्रिक परम्परा स्थापित की थी।

राजीव ने ही भारत को विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना सिखाया था। इसी का परिणाम था कि राजीव गांधी ने श्रीलंका में शांति प्रयासों के लिए भारतीय सैन्य टुकड़ियों को भेजा लेकिन इसके नतीजे में वे खुद लिट्टे के निशाने पर आ गए और उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई। 21 मई, 1991 को राजीव गांधी एक रैली को संबोधित करने के लिए चेन्नई से 30 किलोमीटर दूर श्रीपेरंबुदूर में पहुंचे, इन्हीं में एक लिट्टे सदस्य धनु भी थी। राजीव गांधी के आस-पास काफी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद धनु धनु ने गाँधी के पैर छूये और एकाएक बम फट गया जिसको धनु ने अपने कपड़ों में छुपाया हुआ था। राजीव गाँधी समेत 17 अन्य लोग भी काल के ग्रास बन गये। इसी कारण से 21 मई, राजीव गांधी बलिदान दिवस को आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। राजीव भी भी अपनी मां इंदिराजी के जैसे आतंकवाद के शिकार बने। उन्हें 'भारत रत्न' से भी नवाजा गया था। राजीव ने लोगों के दिलों में अपने को बसाया। स्वर्गीय राजीव गांधी एक ऐसे इंसान थे, जिन्होंने ज़मीन पर ही नहीं, किन्तु जनमानस के हृदय पर भी राज किया। समूचा राष्ट्र राजीव गांधी को उनके 78वें जन्म दिन पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

डा. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

'मेरी कोटपूतली ज़ारोंज़ार रो रही है'

डॉ. विजय नागपाल 'नाविक' मूलत: हरियाणा के गुरूगांव के निवासी है एवं कोटपूतली के स्थानीय डॉक्टर हैं । जो 1977 से यहां अपनी सेवाएं दे रहे है। कोटपूतली की समस्याओं को वे कविता के माध्यम से लिखते रहे हैं । अभी कोटपूतली कस्बे में नगर परिषद द्वारा की गई तोड़-फोड़ पर आपने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे हैं जो इस प्रकार हैं-

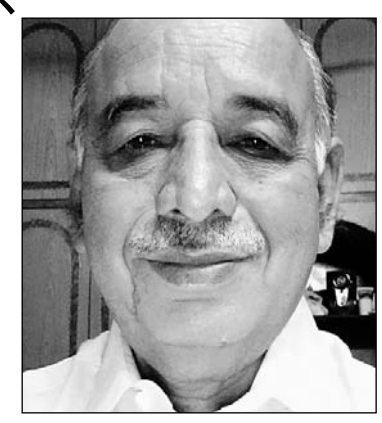

डॉ. विजय नागपाल 'नाविक'

मेरी कोटपुतली जारोंजार रो रही है
ये नियति भी ग़ज़ब कहानी लिख रही है
मेरी अन्नदाता भूमि ,भानगढ़ दिख रही है

राम जाने किसका ये, श्राप पाप ढो रही है
आज मेरी कोटपुतली जारों जार रो रही है

कल तक भरा पूरा समृद्ध बाज़ार था
भरा पूरा ख़रीददारों से ,गुलज़ार था

दिन भर ख़ूब गहमा ग़हमी रहा करती थी
कई परिवार पलते थे ,गृहस्थी चलती थी

रंग बिरंगे वेश में आती थी ग्रामीण नारियां
भागती मोटर साइकलें हॉर्न बजाती लारियाँ

बच्चों की ज़िद कुरकुरे, ड्रेस व खिलौनों की
ललक चाट पकौड़ी,पानी पतासी के दोनों की

मोल भाव करती मिलती थी अनेकों नार
सही दाम है कहते मिला करते दुकानदार

पुरुषों का भी ठसका , बहुत निराला था
चाय बीड़ी संग बतरस का बोलबाला था

मनिहारी,गोटा किनारी,काजल बिंदी लाली
महिलाओं की भीड़ ,ख़रीदें गोरी हों या काली

सांवों की खरीददारी का तो बाज़ार ही गर्म था
उन्हों ने सस्ता ख़रीदा है,सब को इसका भ्रम था

बारहमासी बिक्री होता परचूनी का सामान
मावस छोड़ कर हर दिन खुलती थी दुकान

सुनार ,लखेरा , बरतनवाला , बिजलीवाला
सुबह -सुबह ही सबका ,खुल जाता ताला

वार-त्यौहार रेडीमेड की रहती धूमधाम थी
पार्लर , टेलर कमाई खाते शोहरत नाम की

मिठाई, समोसा, कचौरी वालों की पौ बारह थी
टिक्की छोले, चाट बर्गर, पिज़्ज़ा की वाह वाह थी

अब सब सुनसान है शमशान सा
खंडहर खड़े हैं दीखता वीरान सा

मलबा बिखरा पड़ा चहुँ ओर ही
छिना बच्चों के मुख का कोर भी

तहस नहस कर सब तोड़ डाला
बस बुलडोज़र का है बोलबाला

खून के आँसू रो रहा दुकानदार है
भूखों मरने को अनेकों परिवार हैं

कैसा विकास,ये तो विनाश हो रहा है
शीर्ष नेतृत्व किसकी बाट 'जो' रहा है

विकास तो , मुख पर मुस्कान लाता है
विकास कब, खून के आँसू रुलाता है

धंधा कभी नहीं छीनता, घर नहीं बैठाता है
मायूसी नहीं बांटता , ख़ुशियाँ फैलाता है

कागज प्रमाण देखता है ,नहीं धमकाता है
दया धर्म से विचारता ,मुआवज़ा दिलाता है

पालिका के व खेतड़ी वाले पट्टे किए निरस्त
जनता फिरती मारी -मारी,अधिकारी हैं मस्त

वो कहते हैं लागू कर रहे मास्टर प्लान हैं
परिणाम बता रहे हैं ये डिज़ास्टर प्लान है

कोई तो उन्हें सच्चे विकास का अर्थ समझाओ
तिनका -तिनका जोड़ कर सब बनता ये बताओ

उनके अंदर बैठे हुए राम का अहसास जगाओ
प्रभु अब आप ही मेरी कोटपुतली को बचाओ

मास्टर प्लान के नाम पर परोसे जा रहे ।
कोटपुतली डिज़ास्टर प्लान से बचाओ ।।

हमारी कोटपुतली को बचाओ ।
हमारी कोटपुतली को बचाओ ।।

ब्रिटिश संसद के सामने डीडवाना के जज ने फहराया ध्वज

डीडवाना, (निसं)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत समूचा देश आजादी के जश्न में डूबा हुआ है ओर पूरे देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है।

वहीं रविवार को तिरंगा उस धरती पर भी लहराया जिसका झंडा भारतीय भूमि पर करीब 2 सदियों तक लहराता रहा।

जानकारी अनुसार भारतीय स्वतंत्रता दिवस के मौके पर यूके स्थित ब्रिटिश संसद के सामने भारतीय समुदाय द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया गया।

इस मौके पर डीडवाना की अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ सरिता स्वामी ने कार्यक्रम में शिरकत की ओर लंदन बरो ऑफ साउथवर्क के मेयर सुनील चौपड़ा के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने तिरंगा लहराया। इस अवसर पर अपने भाषण में डॉ सरिता स्वामी ने तिरंगे को भारतीय आन बान ओर शान का प्रतीक बताया।

उन्होंने ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय लोगों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि तिरंगे में वो ताकत है जो हम भारतीयों को देश और विदेश में भी जोड़े रखता है। उन्होंने कहा कि भारत को 75 वर्षों तक एकजुट रखने में भारतीय संविधान का भी विशेष महत्व रहा है।

उन्होंने कहा कि अपने राष्ट्र के मूल्यों को समझने के लिए हमें भारत के संविधान की प्रस्तावना पर विचार करना चाहिए।

राशिफल मंगलवार 23 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, आद्रा नक्षत्र दिन 10:44 तक, सिद्धि योग रात्रि 12:32 तक, बालव करण प्रात: 6:03 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से 10:44 तक है। त्रिपुष्कर योग दिन 10:44 से सूर्योदय तक है। आज अजा एकादशी व्रत वैष्णवों का, उन्मीलिनी महाद्वादशी व्रत है। आज एकादशी तिथि में वृद्धि हुई है और आज से राष्ट्रीय भाद्रपद मास आरम्भ होगा। सायन कन्या में सूर्य प्रवेश प्रात: 8:46 पर होगा और शरद ऋतु आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:18 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:05 तक, शुभ 3:41 से 5:17 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:06, सूर्यास्त 6:53

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले सुसंदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे और व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

सिंह
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सुसंदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय दूर होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण